जलवायु परिवर्तन

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सृष्टि पंचभूतात्मक है। पाँच भूतों से सम्पूर्ण जगत का निर्माण हुआ है। पाँच भूतों से सभी प्राणी अपना भरण–पोषण करते हैं। मनुष्य का शरीर भी पाँच भूतों से मिलकर बना है। यह प्राकृतिक तत्व है। यदि इसमें किसी प्रकार का विकार उत्पन्न न किया जाये तो यह अपने स्वाभाविक स्वरूप में अवस्थित रहता है। भारत एक ऐसा देश है जहाँ पर छः ऋतुएं होती हैं। ऋतुओं के अनुसार हमारा खान–पान, रहन–सहन, वेश–भूषा और कृषि कार्य होते हैं। ऐसा परिवर्तन अन्य देशों में नहीं है। ऋतुओं के अनुसार ही फसलें पैदा होती हैं। बहते हुए झरने, बहती हुई नदिया, सूर्य, चन्द्रमा सभी के लिए हैं। इसमें किसी का अधिकार नहीं है। प्रकृति सबके साथ समान व्यवहार करती है। वर्षा ऋतु में वर्षा का होना, गर्मी में गर्मी का पड़ना और जाड़े में जाड़े का आना स्वाभाविक है। इसीलिए भारत को सबसे सुन्दर देश कहा जाता है। अन्य देशों में जलवायु विषम है, किन्तु भारत की जलवायु सदैव बदलती रहती है।

कालचक्र के परिवर्तन के साथ जलवायु में भी परिवर्तन दिखालाई दे रहा है। प्राचीनकाल में हमारे देश के ऋषियों–महर्षियों ने प्रकृति को प्रसन्न करने के लिए प्रकृति पूजा का विधान किया था। जिसका परिणाम यह था कि प्रकृति और मानव में तादात्म्य था। किन्तु समय के परिवर्तन के साथ यह तादात्म्य बदलता गया। कहीं पर अधिक वर्षा, कहीं पर अधिक गर्मी और कहीं पर अधिक शीत के कारण जन–जीवन नष्ट होते दिखाई दे रहे हैं। यह सब इस कारण से हो रहा है कि पर्यावरण प्रदूषित होता जा रहा है। पर्यावरण प्रदूषण के कारण जलवायु परिवर्तन भी होता जा रहा है। यदि हम समय रहते सचेष्ट नहीं हुए तो मानव अस्तित्व के लिए खतरा पैदा हो सकता है। हिमालय क्षेत्र से ग्लेशियर धीरे–धीरे पिघल रहे हैं यदि यह गति तेज हुई तो जलाप्लावन आने की सम्भावना हो सकती है। जिसका परिणाम विनाश होगा। अतः हमें सावधान हो जाना चाहिए।

मुख्य रूप से सूर्य से प्राप्त ऊर्जा तथा उसके ह्रास के बीच का संतुलन ही हमारी पृथ्वी की जलवायु का निर्धारण और तापमान संतुलन निर्धारित करता है। यह ऊर्जा हवाओं, समुद्री धाराओं और अन्य तन्त्रों द्वारा पूरे संसार में वितरित हो जाती है। यही जलवायु को प्रभावित करती है। जलवायु में परितर्वन के अनेक कारण हैं। सौर विकिरण में परिवर्तन, पृथ्वी के कक्षा में बदलाव, महाद्वीपों की शक्ल में परिवर्तन वातावरण ग्रीन हाऊस की सान्द्रता आदि अनेक कारण जलवायु परिवर्तन के हैं। जलवायु प्रणाली के भीतर ही प्राकृतिक प्रक्रियाओं में परिवर्तन शामिल हैं। पृथ्वी की कक्षा ज्वालामुखी विस्फोट आदि भी इसके कारण हैं। भूमण्डलीय ताप के बढ़ने के कारण गर्मी का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। इसे ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं। पृथ्वी के निकटस्थ सतह वायु और महासागर के औसत तापमान में हो रही वृद्धि के कारण जलवायु परिवर्तन पर असर पड़ रहा है। यदि इसी प्रकार से ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव पड़ता रहा तो आने वाले समय में और गर्मी की सम्भावना हो सकती है। पृथ्वी सूर्य की किरणों से ऊष्मा प्राप्त करती है। ये किरणें वायुमण्डल से गुजरती हुई धरती की सतह से टकराती हैं और पुनः लौट जाती है। पृथ्वी का वायुमण्डल कई गैसों से मिलकर बना है। इनमें कुछ ग्रीन हाऊस गैसें भी शामिल हैं। इनमें से अधिकांश धरती के ऊपर एक प्रकार से प्राकृतिक आवरण बना लेती हैं, जो लौटती किरणों को रोक लेती हैं। इस प्रकार धरती के वातावरण को गर्म बनाती है।

मनुष्यों, प्राणियों और पौधों को जीवित रहने के लिए कम से कम सोलह डिग्री सैल्सियस तापमान आवश्यक होता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि ग्रीन हाऊस गैसों के बढ़ने से यह आवरण और भी सघन या मोटा होता जाता है। जिसके कारण सूर्य की अधिक किरणों को रोकने लगता है और यहीं से शुरू हो जाता है ग्लोबल वार्मिंग का दुष्प्रभाव। संसार के तापमान में होने वाली इस वृद्धि से समुद्र के स्तर में वृद्धि, वर्षा की मात्रा और रचना में महत्वपूर्ण बदलाव आ रहा है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण ही कृषि ऊपज में परिवर्तन, ग्लेशियर का पीछे हटना और प्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा भी उत्पन्न हो गया है। ग्लोबल वार्मिंग के सम्बन्ध में अनेक मुद्दे उठाये जाते हैं। वातावरण में बढ़ते हुए गैसों के प्रभाव के कारण जलवायु परिवर्तन हो रहा है।

जैसे–जैसे जनसंख्या बढ़ रही है वैसे–वैसे प्राकृति तथा पर्यावरणीय संसाधनों पर भी अनावश्यक दबाव बढ़ता जा रहा है। आज विश्व की जनसंख्या लगभग सात अरब के आसपास पहुंच रही है जिसका घातक प्रभाव प्राकृतिक पर्यावरण पर पड़ रहा है। प्रदूषण की मार झेलते–झेलते जल, वायु, भूमि जैसे प्राकृतिक संसाधनों का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है। अगर भविष्य में इसी गति से प्रदूषण होता रहा तो इन संसाधनों को नष्ट होने में अधिक समय नहीं लगेगा। सागर जैसे विशाल जल राशि प्रदूषण से नहीं बच पायी है। छोटे तालाबों, झीलों और नदियों की क्या स्थिति है? यह किसी से छिपी नहीं है। औद्योगीकरण के कारण प्रदूषण बढ़ता जा रहा है, जिससे जलवायु परिवर्तन हो रहा है। संसाधनों का असीमित दोहन हो रहा है। यह सब कारण जलवायु परिवर्तन के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी हैं।